2

अनुभव आधारित अधिगम के संदर्भ में विद्यार्थी-शिक्षकों के दृष्टिकोण का समीक्षात्मक अध्ययन

चित्ररेखा*

हमारी *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* अनुभव आधारित अधिगम की अनुशंसा करती है। अनुभव आधारित अधिगम माध्यम से हम अपने विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, आत्मसम्मान एवं आत्मनिर्भरता का विकास कर सकते हैं। इस शोध का मुख्य उद्देश्य *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में अनुमोदित अनुभव आधारित अधिगम के संदर्भ में विद्यालय स्तर पर पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम और कक्षा-कक्ष में शिक्षक द्वारा अपनाई जाने वाली शिक्षण अधिगम प्रविधि के बारे में विद्यार्थी-शिक्षकों के दृष्टिकोण का अध्ययन करना था ताकि शिक्षक शिक्षा व विद्यालय स्तर पर इनके क्रियान्वयन के लिए उचित कदम उठाए जा सकें और आवश्यक सुधार कर हम एक नयी पाठ्यचर्या या पाठ्यक्रम के निर्माण में अपना योगदान दे सकें। इस शोध के लिए दिल्ली डाईट (मण्डलीय शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान) के प्रथम वर्ष के 70 विद्यार्थी-शिक्षकों को दैव निदर्शन विधि के द्वारा चुना गया। इस शोध के लिए खुली व बंद राय वाली एक स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया और शोध में पाया गया कि अधिकतर (90 प्रतिशत) विद्यार्थी-शिक्षक करके सीखने या प्रयोगात्मक तरीके से सीखने को ही अनुभव आधारित अधिगम समझते हैं। जबकि 41 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों ने माना कि दूसरों के अनुभवों से भी सीखना अनुभव आधारित अधिगम होता है। 71 प्रतिशत विद्यार्थी शिक्षकों के अनुसार विद्यालय स्तर पर उनके अध्यापकों के द्वारा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के दौरान व्याख्यान/सैद्धांतिक/पारंपरिक विधि का प्रयोग सबसे अधिक किया गया। केवल 29 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षक ने बताया कि उनके अध्यापकों के द्वारा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के दौरान करके सीखना/प्रयोगात्मक विधि/अनुभव आधारित विधि/क्रियात्मक या समस्या समाधान जैसी विधियों का प्रयोग किया। 83 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षक मानते हैं कि अनुभव आधारित अधिगम सबसे उत्तम है। 84 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षक मानते हैं कि प्रयोगात्मक व अनुभवात्मक अधिगम कला, विज्ञान, गणित और कार्यानुभव आदि जैसे प्रयोगात्मक विषयों तक ही सीमित है, इसे और विषयों में भी इस्तेमाल किया जाना चाहिए।

**सहायक प्रोफ़ेसर*, (अल.एस.ई.) करिकुलम एंड पैडागॉजी विभाग, मण्डलीय शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, (डी.आई.ई.टी. दक्षिण-पश्चिम) घुम्मनहेड़ा, नयी दिल्ली 110 073

© NCERT not to be republished

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, शैक्षिक क्षेत्र में शिक्षा से जुड़े विभिन्न शैक्षिक सिद्धांतों, सरकार की शैक्षिक नीतियों, शैक्षिक कानूनों और नियमों आदि का एक ऐसा विस्तृत संग्रह है, जो शिक्षा प्रणाली के विभिन्न स्तरों (प्रारंभिक स्तर, माध्यमिक स्तर एवं उच्च स्तर) पर संचालन के लिए व्यापक रूप से तैयार किया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य वर्तमान व भावी समाज की आवश्यकता के अनुसार शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन कर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की समुचित व्यवस्था करना होता है। हमारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति अब तक तीन बार बनाई जा चुकी है। यह पहली बार वर्ष 1968, दूसरी बार वर्ष 1986 और तीसरी बार वर्ष 2020 में। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के रूप में लगभग 34 वर्ष बाद बनकर हमारे सामने आई है। इन सभी शिक्षा नीतियों की अपनी-अपनी विशेषता रही है। परंतु इन सब नीतियों का प्रमुख ध्येय विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास पर बल देना है और एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की व्यवस्था करने का प्रयास करना है, जो विद्यार्थियों को वास्तविक अनुभव प्रदान करते हुए उनमें समझ विकसित करे।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति का विद्यालयी शिक्षा में उचित प्रकार से क्रियान्वयन करने के लिए हमारे देश में अब तक चार राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखाएँ विकसित की जा चुकी हैं। पहली राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा वर्ष 1975, दूसरी वर्ष 1988, तीसरी वर्ष 2000 और चौथी वर्ष 2005 में विकसित की गई थी। अब *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में सरकार द्वारा पाँचवी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा बनाने के प्रस्ताव का अनुमोदन किया गया है।

'पाठ्यचर्या की रूपरेखा' पाठ्यक्रम और विभिन्न प्रकार के शैक्षिक अनुभव प्रदान करने वाली विभिन्न क्रियाओं की एक योजना है। जो शिक्षार्थियों के सर्वांगीण (सामाजिक, ज्ञानात्मक, भावात्मक, क्रियात्मक, नैतिक आदि) विकास पर केंद्रित होती है। इसमें शिक्षार्थियों के संतुलित व समन्वित विकास से संबंधित अधिगम प्रतिफलों की प्राप्ति विषय विशेष एवं अन्य संबंधित विशेषताओं के संदर्भ में विद्यालयों में तथा विद्यालय के बाहर किस प्रकार से की जाएगी, इसकी व्यापक रूपरेखा प्रस्तुत की जाती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के बिंदु 4.6 और 4.7 में अनुभव आधारित अधिगम विषय को गंभीर और महत्वपूर्ण मानते हुए इसे बढ़ावा देने के लिए प्रायोगिक अधिगम आधारित कौशलों को अपनाने की सिफ़ारिश करते हुए विद्यार्थियों को करके सीखने के अवसर प्रदान करने की अनुशंसा की गई है और इसे जीवंत व वास्तविक रूप देने के लिए कला, खेल समन्वय और कहानी आदि शिक्षणशास्त्र के माध्यम से राष्ट्रीय पाठ्यचर्या में शामिल करने पर बल दिया गया है ताकि वांछनीय अधिगम परिणाम प्राप्त किए जा सकें।

अनुभव आधारित अधिगम का महत्व

अनुभव आधारित अधिगम शिक्षण का एक तरीका है जो शिक्षार्थियों को 'करो, प्रतिबिंबित करो, और सोचो और लागू करो' के दौरान सीखने की अनुमति देता है (बटलर और अन्य, 2019)। छात्र एक मूर्त

अनुभव में भाग लेते हैं (करते हैं), उस अनुभव और अन्य सबूतों को दोहराते हैं (प्रतिबिंबित करते हैं), अनुभवों और सूचनाओं के अनुरूप सिद्धांतों की खेती करते हैं (सोचते हैं), और एक धारणा को स्पष्ट करते हैं या किसी समस्या को स्पष्ट करते हैं (लागू करें)।

- अनुभव आधारित अधिगम मनोवैज्ञानिक होने के साथ-साथ रुचिकर, प्रभावी, व्यावहारिक एवं दैनिक जीवन के लिए बहुत उपयोगी है।
- अनुभव आधारित अधिगम वह जीवन शिक्षा है, जो जीवन से प्राप्त और जीवन के लिए है।
- अनुभवों से हमारी मानसिक, सामाजिक व भावात्मक परिपक्वता बढ़ती है।
- वर्तमान में प्राप्त अनुभव भविष्य की नींव होते हैं। इस प्रकार पुराने अनुभव भविष्यवाणी करने में मदद करते हैं।
- अनुभव स्थिर नहीं होते, ये लचीले एवं प्रगतिशील होते हैं।
- अनुभव समस्या-समाधान का एक महत्वपूर्ण साधन हैं।
- हम अनुभव किसी से भी एवं कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं, तथा इसी प्रकार से इनका प्रयोग भी कर सकते हैं।
- अनुभव आधारित अधिगम का क्षेत्र व्यापक है, इसलिए यह सभी विषयों और सभी क्षेत्रों में किया जा सकता है।
- अनुभव औपचारिक और अनौपचारिक दोनों रूप से हासिल किए जा सकते हैं, जैसे— विभिन्न घटनाओं, पाठ्यपुस्तकों, व्यवहार अवलोकन, परिवार एवं साथियों, समाज, अपने आसपास के परिवेश आदि से।
- पुरानी एवं अन्य व्यक्तियों की बातों या घटनाओं को पुन:स्मरण करके व उनका समीक्षात्मक अध्ययन करके भी अनुभव हासिल कर सकते हैं।
- अनुभव प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से प्राप्त किए जा सकते हैं।
- पुराने अनुभव नए अनुभव को हासिल करने में मदद करते हैं।
- अनुभव कई प्रकार के हो सकते हैं, जैसे— सामाजिक अनुभव, भावात्मक अनुभव, व्यवहारात्मक अनुभव, कार्यात्मक अनुभव, कलात्मक अनुभव, कौशल अनुभव, व्यक्तिगत अनुभव, सामूहिक अनुभव आदि।
- अनुभवों का आयु से कोई लेना देना नहीं है, कम आयु वाला व्यक्ति भी अधिक अनुभवी हो सकता है। कोई व्यक्ति कितना अनुभवी है यह निर्भर करता है कि उसने कितने अनुभव अर्जित किए हैं उसे अनुभव अर्जित करने के कितने अवसर मिले हैं और उसने उनका प्रयोग किस प्रकार से किया है।

प्रस्तुत शोध का औचित्य

अनुभव आधारित अधिगम संज्ञानात्मक अधिगम उपागमों से भिन्न है— कक्षा-आधारित पाठ्यचर्या में शामिल अनुभवात्मक अधिगम ज्ञान के वितरण के एक शिक्षार्थी केंद्रित मॉडल पर ध्यान केंद्रित करके छात्र सीखने की क्षमता का विस्तार करने के लिए लाभकारी सिद्ध हुआ है (कोल्ब, 1999)। एक अनुभवात्मक अधिगम के माहौल में सीखने पर ज़ोर

© NCERT not to be republished

शिक्षक से छात्र मॉडल में एक संशोधित सुविधाकर्ता और छात्र केंद्रित मॉडल पर वापस आ जाता है जहाँ छात्र अनुभव, संस्कृति और वर्तमान परिस्थितियों के आधार पर यह चुनता है कि वह कैसे सीखता है। अनुभव आधारित अधिगम के संदर्भ में जो, वर्डिंगर (2010) ने पाया कि माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक निचले स्तर के संज्ञानात्मक कौशल पर बहुत अधिक ज़ोर देते हैं। रेखा रानी (2017), माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि, विज्ञान की आत्म-प्रभावकारिता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर अनुभवात्मक शिक्षण कार्यक्रम के प्रभाव का अध्ययन करते हुए पाया कि विज्ञान के विषय में छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि, आत्म-प्रभावकारिता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ाने के लिए अनुभवात्मक शिक्षण मॉडल अधिक प्रभावी है। उच्च प्राथमिक स्तर पर अनुभवात्मक सीखने का दृष्टिकोण विज्ञान, विज्ञान प्रक्रिया कौशल और उनके प्रति दृष्टिकोण विकसित करना, अनुभवात्मक अधिगम उपागम के माध्यम से अध्यापन करते समय अधिगम प्राप्ति में सहायक है (राजेशबाबू रेड्डीपल्ली, 2018)।

शोध अध्ययनों में पाया गया कि अनुभवात्मक अधिगम के क्षेत्र में आधिकांश शोध केवल विज्ञान, गणित जैसे विषयों के क्षेत्र में ही किए गए। इसलिए वर्तमान शोध (1) अनुभव आधारित अधिगम के संदर्भ में विद्यार्थी-शिक्षकों के दृष्टिकोण का अध्ययन (2) विद्यालय स्तर पर हमारे अध्यापक, पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम और शिक्षण अधिगम विधियाँ किस स्तर तक विद्यार्थियों को अनुभव आधारित अधिगम प्रदान करने में सक्षम हैं? (3) हमारे विद्यार्थी-शिक्षक *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में अनुमोदित अनुभव आधारित अधिगम के प्रति कितनी जानकारी रखते हैं? (4) विद्यालय स्तर पर अनुभवों द्वारा अधिगम कराने के लिए क्या, कहाँ और कैसे सुधारात्मक परिवर्तन किए जा सकते हैं? इत्यादि प्रश्नों के उत्तर जानने के साथ-साथ, प्राप्त परिणामों को विद्यार्थी शिक्षकों के प्रशिक्षण में इस्तेमाल करने के लिए अध्ययन किया गया था।

उद्देश्य

- अनुभव आधारित अधिगम के संदर्भ में विद्यार्थी-शिक्षकों के दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
- यह ज्ञात करना कि विद्यालय स्तर पर पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम और शिक्षण अधिगम विधियाँ किस स्तर तक विद्यार्थियों में अनुभव आधारित अधिगम प्रदान करने में सक्षम हैं।
- शोध से प्राप्त परिणामों के आधार पर विद्यालय व शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान के लिए आवश्यक सुझाव देना।

कार्यात्मक परिभाषाएँ

विद्यार्थी-शिक्षक

विद्यार्थी-शिक्षकों से तात्पर्य उन विद्यार्थी-शिक्षकों से हैं, जिन्होंने प्रारंभिक विद्यालयी स्तर पर शिक्षक बनने के पेशेवर कार्यक्रम डी.एल.एड. हेतु डाइट (ज़िला या मण्डलीय शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, दक्षिण-पश्चिम, घुम्मनहेड़ा), नयी दिल्ली शिक्षक-शिक्षा के लिए प्रवेश लिया है।

© NCERT not to be republished

अनुभव आधारित अधिगम

व्यक्ति द्वारा स्वयं अपनी इंद्रियों के माध्यम से चाहे वह कार्य कर, प्रयोग कर, अवलोकन कर, देखकर, सूँघकर, चखकर, स्पर्श कर आदि से जो ज्ञान व कौशल अर्जित या प्राप्त किया जाता है, वह अनुभव आधारित अधिगम कहलाता है।

शोध सीमाएँ

1. इस शोध अध्ययन में डाइट (ज़िला या मण्डलीय शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, दक्षिण-पश्चिम, घुम्मनहेड़ा), नयी दिल्ली के प्रथम वर्ष के उन विद्यार्थी-शिक्षकों को शामिल किया गया था, जिन्होंने विभिन्न विद्यालयों से उच्चतर माध्यमिक शिक्षा (12वीं कक्षा) उत्तीर्ण करने के उपरांत डाइट में डी.एल.एड. कार्यक्रम में शिक्षक-शिक्षा के लिए प्रवेश लिया था। अलग-अलग विद्यालयों में अधिगम के कारण इनके पास अपना भिन्न विद्यालयी अनुभव था।
2. इन विद्यार्थी-शिक्षकों के पास कोविड-19 महामारी के कारण ऑनलाइन कक्षाएँ होने की वजह से डाइट के प्रशिक्षण, उसकी पाठ्यचर्या व प्रशिक्षण प्रणाली का कोई खास प्रत्यक्ष पूर्व अनुभव नहीं था।
3. शोध से पूर्व विद्यार्थी शिक्षकों से राष्ट्रीय शिक्षा नीति को पढ़ने के लिए बोला गया था इसलिए शोध के समय यह माना गया था कि इन विद्यार्थी शिक्षकों के पास *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* अनुमोदित अनुभव आधारित अधिगम के संबंध में जानकारी अवश्य होगी।

न्यादर्श

इस शोध अध्ययन में न्यादर्श के रूप में डाइट (ज़िला या मण्डलीय शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, दक्षिण-पश्चिम, घुम्मनहेड़ा), नयी दिल्ली के डी.एल.एड. कार्यक्रम के प्रथम वर्ष (2020) के 70 विद्यार्थी-शिक्षकों का दैव निदर्शन विधि के द्वारा चयन किया गया था।

उपकरण

इस शोध अध्ययन हेतु शोधार्थी द्वारा एक प्रश्नावली बनाई गई थी, जिसमें खुली एवं बंद राय व्यक्त करने वाले प्रश्नों को शामिल किया गया था।

आँकडों का विश्लेषण एवं विवेचना

इस शोध अध्ययन हेतु शोधार्थी द्वारा प्रश्नावली के आधार पर प्राप्त आँकड़ों एवं तथ्यों का संकलन किया गया। तत्पश्चात् संकलित आँकड़ों एवं तथ्यों का सारणीयन करने के पश्चात् उनका विश्लेषण एवं विवेचना की गई। आँकड़ों के विश्लेषण हेतु सांख्यिकी के रूप में प्रतिशत का प्रयोग किया गया।

तालिका 1— अनुभव आधारित अधिगम का अर्थ

अनुभव आधारित अधिगम का अर्थ	प्रतिशत	
	हाँ	*नहीं*
भावनाओं व संवेदनाओं के द्वारा अपने तरीके से सीखना	80	20
स्वयं करके सीखना एवं प्रयोग या परीक्षण के द्वारा सीखना	90	10
अपने परिवेश से सीखना	67	33
दूसरों के अनुभवों से भी सीखना	41	59

© NCERT not to be republished

तालिका 1 अनुभव आधारित अधिगम के अर्थ पर विद्यार्थी-शिक्षकों की राय को व्यक्त करती है। 80 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों के अनुसार अपनी भावनाओं व संवेदनाओं के द्वारा अपने तरीके से सीखना, तथा 90 प्रतिशत के अनुसार स्वयं करके सीखना एवं प्रयोग या परीक्षण के द्वारा सीखना अनुभव होता है। 67 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों ने बताया कि अपने परिवेश से सीखना भी अनुभव प्रदान करता है। 41 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों ने माना कि दूसरों के अनुभवों से भी सीखना अनुभव आधारित अधिगम होता है। इस प्रकार तालिका 1 के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि अधिकतर (90 प्रतिशत) विद्यार्थी-शिक्षक करके सीखने या प्रयोगात्मक तरीके से सीखने को ही अनुभव आधारित अधिगम समझते हैं।

तालिका 2

क्रम सं.	प्रश्न	हाँ	नहीं
1.	'करके सीखने' व 'अनुभव द्वारा सीखने' में अंतर होता है?	41	59
2.	क्या अनुभव आधारित अधिगम को अन्य प्रकार से किए गए अधिगम से उत्तम माना जाता है?	83	17
3.	क्या हमारी विद्यालयी पाठयचर्या, पाठ्यवस्तु व शिक्षण विधि हमें अनुभव आधारित ज्ञान प्रदान करने में सक्षम है?	21	79

तालिका 2 में दिया गया प्रश्न 1 'करके सीखने' व 'अनुभव द्वारा सीखने' में अंतर के आधार पर विद्यार्थी-शिक्षकों की राय को व्यक्त करता है। 59 प्रतिशत ने विद्यार्थी-शिक्षकों के अनुसार 'करके सीखने' व 'अनुभव द्वारा सीखने' में कोई अंतर नहीं होता, उन्होंने बताया कि 'करके सीखना' और 'अनुभव द्वारा सीखना' एक ही बात है। उनके अनुसार, 'करके सीखने' का मतलब होता है— प्रयोगात्मक तरीके से अपनी ज्ञानेंद्रियों का प्रयोग करते हुए प्रत्यक्ष रूप से अनुभव हासिल करते हुए सीखना। 41 प्रतिशत विद्यार्थी शिक्षक मानते हैं कि 'करके सीखने' व 'अनुभव द्वारा सीखने' में अंतर होता है, उनके अनुसार 'करके सीखना', 'अनुभवों के द्वारा सीखने' का एक भाग है। उन्होंने बताया कि 'अनुभव द्वारा सीखने' के अंतर्गत दो प्रकार के अनुभवों से सीखा जा सकता है— (1) 'करके सीखना' अर्थात् कार्य को करते हुए स्वयं के अनुभवों के द्वारा सीखा जा सकता है तथा (2) दूसरे के 'अनुभवों के द्वारा सीखना' अर्थात् अन्य लोगों द्वारा प्राप्त अनुभवों को साझा करने व उनके व्यवहार के निरीक्षण के द्वारा भी सीखा जा सकता है। दूसरे लोगों के अनुभवों से प्राप्त अनुभव अप्रत्यक्ष रूप से प्राप्त अनुभव होते हैं और इन अनुभवों के द्वारा जल्दी व कम समय में सीखा जा सकता है।

तालिका 1 में अधिकतर (90 प्रतिशत) विद्यार्थी-शिक्षक 'करके सीखने' या प्रयोगात्मक तरीके से सीखने को ही अनुभव आधारित अधिगम समझते हैं। तालिका 2 में 59 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षक इस बात से सहमत हैं और 41 प्रतिशत इस बात से सहमत नहीं हैं। इसलिए यहाँ पर प्राप्त जवाबों में 10 प्रतिशत में भिन्नता पाई जाती है।

तालिका 2, प्रश्न संख्या 2, अनुभव आधारित अधिगम अन्य प्रकार से किए गए अधिगम से उत्तम है या नहीं के संबंध में विद्यार्थी-शिक्षकों की राय को

व्यक्त करता है। 83 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों ने बताया कि अनुभव आधारित अधिगम को अन्य प्रकार से किए गए अधिगम से उत्तम माना जा सकता है क्योंकि अनुभव आधारित अधिगम रटने की प्रवृत्ति को समाप्त करता है और सीखने का प्रत्यक्ष अवसर प्रदान करने के साथ-साथ सृजनात्मक चिंतन, समझ व तर्क शक्ति को बढ़ाता है जो उनके दैनिक जीवन में बहुत उपयोगी है। 17 प्रतिशत विद्यार्थी शिक्षक अनुभव आधारित अधिगम को अन्य प्रकार से किए गए अधिगम से उत्तम नहीं मानते। उनके अनुसार अनुभवों के द्वारा सीखने में अधिक समय और श्रम की आवश्यकता होती है जिसके कारण वे कक्षा के अन्य विद्यार्थियों से व अन्य प्रकार की प्रतियोगिताओं में पिछड़ जाते हैं, इसलिए इसे उत्तम नहीं माना जा सकता। प्रश्न संख्या 3 का उत्तर देते हुए 79 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों ने बताया कि हमारी विद्यालयी पाठ्यचर्या, पाठ्यवस्तु व शिक्षण विधि अनुभव आधारित ज्ञान प्रदान करने में इतने सक्षम नही हैं, जितना कि उन्हें होना चाहिए। उनके अनुसार पाठ्यचर्या/पाठ्यक्रम छात्रों को किताबी सैद्धांतिक ज्ञान व सूचना प्रदान करने और पेपर-पेन परीक्षा के लिए तैयार करने का तो पूरा प्रयास करती है परंतु वह व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करने का बहुत कम प्रयास करती है जो उनके दैनिक जीवन व जीवन परीक्षा में

तालिका 3

क्रम सं.	प्रश्न	प्रतिशत
1.	विद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों को अनुभव प्रदान कराने का सबसे श्रेष्ठ एवं प्रभावी माध्यम	
क	पाठ्यचर्या/पाठ्यक्रम/विषयवस्तु	21
ख	शिक्षण अधिगम विधि	67
ग	शिक्षण अधिगम सामग्री	12
2.	अनुभव आधारित अधिगम का अधिगम क्षेत्र/व्यापकता	
क	क्या अनुभव आधारित अधिगम सभी विषयों में किया जा सकता है?	16
ख	क्या यह कला, विज्ञान और कार्यानुभव जैसे विषयों तक ही सीमित है?	84
3.	*राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में विशेष रूप से अनुमोदित अधिगम विधि कौन-सी है?	
क	करके सीखना/प्रयोगात्मक/अनुभव आधारित	97
ख	सैद्धांतिक/व्याख्यान/पारंपरिक	03
4.	विद्यालय स्तर पर (12वीं कक्षा तक) अधिगम के लिए अध्यापकों द्वारा सबसे अधिक प्रयोग में लाई जाने वाली शिक्षण अधिगम विधि	
क	करके सीखना/प्रयोगात्मक विधि/क्रियात्मक/अनुभव आधारित विधि आदि	29
ख	सैद्धांतिक/व्याख्यान/पारंपरिक विधि	71

© NCERT not to be republished

काम आए। इसलिए वे मानते हैं अभी इनमें काफ़ी सुधार की आवश्यकता है। 21 प्रतिशत विद्यार्थी शिक्षकों ने बताया कि पाठ्यपुस्तकों में विभिन्न प्रकार की कहानियों, घटनाओं आदि के माध्यम से अनुभव प्रदान करने का प्रयास किया जाता है।

तालिका 3 का प्रश्न 1 विद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों को अनुभव प्रदान कराने के श्रेष्ठ एवं प्रभावी माध्यम के संबंध में विद्यार्थी-शिक्षकों की राय को व्यक्त करता है। 21 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों ने बताया कि पाठ्यचर्या/पाठ्यक्रम/विषयवस्तु के माध्यम से विद्यार्थियों को विभिन्न प्रकार के अनुभव प्रदान किए जा सकते हैं, इसलिए विद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों को अनुभव प्रदान कराने का ये सबसे श्रेष्ठ एवं प्रभावी माध्यम है। 67 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों के अनुसार शिक्षण अधिगम विधि विशेषकर जिसमें छात्र भी शामिल हों, उन्हें भी प्रतिक्रिया करने का अवसर मिले, विद्यार्थियों को अनुभव प्रदान करने का सबसे श्रेष्ठ एवं प्रभावी माध्यम है। उन्होंने बताया कि पाठ्यचर्या/पाठ्यक्रम/विषयवस्तु के अंतर्गत अनुभव प्रदान करने के अवसरों का वर्णन तो किया जाता है परंतु इनका सफल क्रियान्वयन शिक्षण अधिगम विधि पर निर्भर करता है, इसलिए अनुभव आधारित अधिगम प्रविधि को अपनाने पर विशेष रूप से बल दिया जाना चाहिए। केवल 12 प्रतिशत विद्यार्थी शिक्षकों का कहना है कि शिक्षण अधिगम सामग्री भी विद्यार्थियों को अनुभव प्रदान करने में सहायक हो सकती है। उनके मत के अनुसार शिक्षण अधिगम सामग्री शिक्षण अधिगम विधि को प्रभावी बनाने का माध्यम मात्र है और इसके अलावा इनका अपने आप में इतना कोई विशेष महत्व नहीं होता।

प्रश्न 2 अनुभव आधारित अधिगम के अधिगम क्षेत्र/व्यापकता के संदर्भ में विद्यार्थी-शिक्षकों की राय को व्यक्त करता है। 16 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों ने बताया कि अनुभव द्वारा अधिगम केवल कुछ विषयों तक सीमित नहीं है, यह सभी विषयों में किया जा सकता है। इसका अधिगम क्षेत्र काफ़ी व्यापक है, इसलिए इसे कला और कार्यानुभव जैसे विषयों तक सीमित नहीं माना जा सकता। 84 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों के अनुसार यह कला, विज्ञान, गणित और कार्यानुभव आदि जैसे प्रयोगात्मक विषयों तक ही सीमित है। उन्होंने बताया कि अनुभव आधारित अधिगम का प्रयोग सामाजिक विज्ञान विषय विशेषकर इतिहास, राजनीति शास्त्र, अर्थशास्त्र आदि जैसे विषयों के अधिगम के लिए नहीं किया जा सकता, ऐसा करना बहुत कठिन है। यहाँ पर यह बात स्पष्ट होती है कि अधिकांश विद्यार्थी-शिक्षक 'करके सीखने' को ही अनुभव आधारित अधिगम मानते हैं।

तालिका 3 में दिए गए प्रश्न 3 का उत्तर देते हुए 97 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों ने बताया कि *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में 'करके सीखना'/प्रयोगात्मक/अनुभव आधारित अधिगम प्रविधि के माध्यम से अधिगम कराने पर विशेष रूप से बल दिया गया है।

तालिका 3 में दिया गया प्रश्न 4 विद्यालय स्तर पर (12वीं कक्षा तक) अधिगम के लिए अध्यापकों द्वारा सबसे अधिक प्रयोग में लाई जाने वाली शिक्षण अधिगम विधि के संबंध में विद्यार्थी शिक्षकों की राय को व्यक्त करता है। 71 प्रतिशत

© NCERT not to be republished

विद्यार्थी-शिक्षकों ने बताया विद्यालय स्तर पर उनके अध्यापकों के द्वारा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के दौरान व्याख्यान/सैद्धांतिक/पारंपरिक विधि का प्रयोग सबसे अधिक किया गया। 29 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षक ऐसे थे जिन्होंने बताया कि उनके अध्यापकों के द्वारा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के दौरान 'करके सीखना'/प्रयोगात्मक विधि/अनुभव आधारित विधि/क्रियात्मक या समस्या समाधान जैसी विधियों का प्रयोग किया गया।

जब विद्यार्थी-शिक्षकों से पूछा गया कि अनुभव आधारित अधिगम प्रदान करने के लिए *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में अनुभव आधारित अधिगम विधि के अलावा और किन प्रावधानों की बात की गई है? तब 17 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों ने बताया कि अनुभव आधारित अधिगम व करके सीखने व सीखाने के लिए कला एकीकृत, खेल एकीकृत, कहानी आधारित शिक्षाशास्त्र आदि प्रावधानों की बात *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में की गई है।

अनुभवों के द्वारा सीखाने के लिये विद्यालय स्तर पर क्या, कहाँ और कैसे प्रयास किए जा सकते हैं? इस संदर्भ में विद्यार्थी-शिक्षकों ने अपनी राय व्यक्त करते हुए कई सुझाव दिए, जैसे— शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के दौरान विद्यार्थियों की भागीदारी को बढ़ाने के लिए और प्रायोगिक अधिगम का व्यावहारिक अनुप्रयोग कराने के लिए उचित अवसर प्रदान करना चाहिए, विभिन्न प्रकार की विद्यार्थी केंद्रित विधियों का प्रयोग करना और विद्यार्थियों को सीखने के लिए एक सकारात्मक लोकतांत्रिक वातावरण तैयार करना चाहिए, उनकी बातों व अनुभवों को महत्ता देना तथा पाठ्यचर्या में सैद्धांतिक ज्ञान की अपेक्षा व्यावहारिक ज्ञान को उचित स्थान देना चाहिए।

शोध निष्कर्ष एवं चर्चा

इस शोध के द्वारा प्राप्त परिणामों की व्याख्या एवं विश्लेषण के बाद निम्नांकित निष्कर्ष प्राप्त हुए—

- अधिकतर (90 प्रतिशत) विद्यार्थी-शिक्षक करके सीखने या प्रयोगात्मक तरीके से सीखने को ही अनुभव आधारित अधिगम समझते हैं।
- 59 प्रतिशत ने विद्यार्थी-शिक्षकों के अनुसार 'करके सीखने' व 'अनुभव द्वारा सीखने' में कोई अंतर नहीं होता।
- 41 प्रतिशत विद्यार्थी शिक्षक मानते हैं कि 'करके सीखने' व 'अनुभव द्वारा सीखने' में अंतर होता है, इसलिए यहाँ पर प्राप्त जवाबों में 10 प्रतिशत में भिन्नता पाई गई।
- 83 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों ने बताया कि अनुभव आधारित अधिगम को अन्य प्रकार से किए गए अधिगम से उत्तम माना जा सकता है।
- 17 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षक अनुभव आधारित अधिगम को अन्य प्रकार से किए गए अधिगम से उत्तम नहीं मानते, उनके अनुसार अनुभवों के द्वारा सीखने में अधिक समय और श्रम की आवश्यकता होती है।
- 21 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों ने बताया कि पाठ्यचर्या/पाठ्यक्रम/विषयवस्तु के माध्यम से विद्यार्थियों को विभिन्न प्रकार के अनुभव प्रदान किए जा सकते हैं।
- 67 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों के अनुसार छात्र केंद्रित शिक्षण अधिगम विधि विद्यार्थियों को

© NCERT not to be republished

अनुभव प्रदान करने का सबसे श्रेष्ठ एवं प्रभावी माध्यम है।

- केवल 12 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों का कहना है कि शिक्षण अधिगम सामग्री भी विद्यार्थियों को अनुभव प्रदान करने में सहायक हो सकती है।
- 79 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों ने बताया कि हमारी विद्यालयी पाठ्यचर्या, पाठ्यवस्तु व शिक्षण विधि आदि औपचारिक शिक्षा व सैद्धांतिक जानकारी देने में अधिक विश्वास रखते हैं और अनुभव आधारित ज्ञान प्रदान करने में इतने सक्षम नहीं हैं जितना कि उन्हें होना चाहिए।
- 21 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों ने बताया कि पाठ्यपुस्तकों में विभिन्न प्रकार की कहानियों, घटनाओं आदि के माध्यम से अनुभव प्रदान करने का प्रयास किया जाता है।
- 16 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों ने बताया कि अनुभव द्वारा अधिगम केवल कुछ विषयों तक सीमित नहीं है, यह सभी विषयों में किया जा सकता है। इसका अधिगम क्षेत्र काफ़ी व्यापक है इसलिए इसे कला और कार्यानुभव जैसे विषयों तक सीमित नहीं माना जा सकता।
- 84 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों के अनुसार यह कला, विज्ञान, गणित और कार्यानुभव आदि जैसे प्रयोगात्मक विषयों तक ही सीमित है।
- 97 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों ने बताया कि *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में करके सीखना/प्रयोगात्मक/अनुभव आधारित अधिगम प्रविधि के माध्यम से अधिगम कराने पर विशेष रूप से बल दिया गया है।
- 71 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों ने बताया विद्यालय स्तर पर उनके अध्यापकों के द्वारा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के दौरान व्याख्यान/सैद्धांतिक/पारंपरिक विधि का प्रयोग सबसे अधिक किया गया।
- 29 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षक ऐसे थे जिन्होंने बताया कि उनके अध्यापकों के द्वारा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के दौरान करके सीखना/प्रयोगात्मक विधि/अनुभव आधारित विधि/क्रियात्मक या समस्या समाधान जैसी विधियों का प्रयोग किया गया।
- केवल 17 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों ने बताया कि अनुभव आधारित अधिगम व करके सीखने व सीखाने के लिए कला एकीकृत, खेल एकीकृत, कहानी आधारित शिक्षाशास्त्र आदि प्रावधानों की बात *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में की गई है।

83 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों ने (कोल्ब, 1999) माना कि अनुभव आधारित अधिगम अन्य प्रकार से किए गए अधिगम से उत्तम है। अनुभवात्मक अधिगम छात्र सीखने की क्षमता का विस्तार करने के लिए लाभकारी सिद्ध है। शोध में भी यह पाया गया कि विद्यालय के शिक्षक निचले स्तर के संज्ञानात्मक कौशल पर बहुत अधिक ज़ोर देते हैं (एस. वर्डिंगर, 2010)। 84 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों ने यह माना कि (शिवानी, 2018 और राजेशबाबू रेड्डीपल्ली, 2018) कला, विज्ञान, गणित और कार्यानुभव आदि जैसे प्रयोगात्मक विषयों में अनुभावात्मक अधिगम का प्रभावी ढंग से उपयोग किया जा सकता है। वर्तमान पाठ्यक्रम में अनुभवात्मक शिक्षा को शामिल

करना अधिक व्यवहार्य समाधान हो सकता है। इस प्रयास को एकीकृत विषयगत निर्देश के समावेश के माध्यम से सुगम बनाया जा सकता है (डेविड रैपापोर्ट, 2013)।

सुझाव

शोध के दौरान विद्यार्थी-शिक्षकों ने अपने पूर्व विद्यालयी अनुभवों का प्रयोग करते हुए शोध प्रश्नों के उत्तर दिए हैं, इसलिए विद्यार्थी-शिक्षकों के अनुभवों का पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम निर्माण एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में विशेष महत्व है फिर वह पाठ्यचर्या स्कूली विद्यार्थियों के लिए हो या फिर शिक्षक शिक्षा संस्थान के लिए हो। उनके अनुभवों के आधार पर हम एक ठोस एवं व्यावहारिक पाठ्यचर्या का निर्माण कर शिक्षा के क्षेत्र में एक व्यापक सुधार ला सकते हैं। इस शोध से प्राप्त परिणाम सेवाकालीन शिक्षकों और पूर्व-सेवाकालीन शिक्षकों दोनों के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। यह शोध *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में दिए गए प्रावधानों के वास्तविक प्रयोग और उनके प्रति समझ पैदा करने के लिए एक सटीक रणनीति बनाने को प्रोत्साहित करता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या बनने के उपरांत अभी भी तक हम किताबी और रटी हुई शिक्षा पद्धति और परंपरागत शिक्षण अधिगम विधियों के जाल में फसे हुए हैं तथा इस जाल से बाहर निकलने के लिए हमें अपनी योजनाओं को पेपर से बाहर निकालकर उसे जीवंत रूप प्रदान करना होगा एवं उनके क्रियान्वयन के लिए उचित व्यावहारिक रणनीति बनाने के साथ-साथ उनके क्रियान्वयन की निगरानी की उचित व्यवस्था भी करनी होगी। हमें अभी निम्न बिंदुओं पर अत्याधिक कार्य करने की आवश्यकता है।

विद्यालय के लिए

1. विद्यालय स्तर पर पाठ्यचर्या के अंतर्गत अधिगम अनुभवों के विभिन्न पहलुओं एवं आयामों को एकीकृत रूप में शामिल कर उन्हें वास्तविक रूप से क्रियान्वित किया जाना चाहिए।
2. पाठ्यक्रम में दी गई विषयवस्तु को सीमित कर कम किए जाने के साथ-साथ उसे दैनिक जीवन की आवश्यकताओं के साथ जोड़कर उसे रुचिकर बनाना चाहिए।
3. अनुभव आधारित विभिन्न प्रकार की शिक्षण अधिगम विधियों और शिक्षण अधिगम सामग्री के व्यावहारिक प्रयोग पर बल देना चाहिए व उनके सही व वास्तविक रूप से क्रियान्वयन के लिए उनकी निगरानी व निरीक्षण की योजनाएँ भी बनाई जानी चाहिए।
4. विद्यालय या कक्षा के अंदर व बाहर विद्यार्थियों को वास्तविक या उसी प्रकार का कृत्रिम अर्थात् बनावटी वातावरण, सुविधाएँ या परिस्थितियाँ प्रदान करना जिससे कि विद्यार्थी तदनुभूति करते हुए विभिन्न प्रकार के अनुभवों के द्वारा सीखने को प्रेरित हो सकें।
5. शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के दौरान विद्यार्थियों की भागीदारी को बढ़ाने के लिए एक सकारात्मक लोकतांत्रिक वातावरण तैयार करना।
6. कक्षा के अंदर व बाहर विद्यार्थियों की बातों व अनुभवों को महत्ता देना व साझा करने के अवसर देना।

शिक्षक शिक्षा संस्थान के लिए

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति द्वारा विशेष रूप से अनुमोदित अनुभव आधारित अधिगम को शिक्षक शिक्षा की पाठ्यचर्या में अलग से एक पाठ्यक्रम के रूप में शामिल कर उसे शिक्षण उपागम, विधियों के रूप में शामिल किया जाना चाहिए।
2. पाठ्यक्रम निर्माण में विशेषज्ञों व अनुभवी व्यक्तियों, अनुभवी अध्यापकों के न केवल अनुभवों की सहायता ली जाए बल्कि उनके अनुभवों को कहानी आदि के माध्यम से पाठ्यक्रम में शामिल भी किया जाना चाहिए।
3. अनुभव आधारित अधिगम पर विस्तृत रूप से शिक्षक शिक्षा की व्यवस्था करना और *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में अनुमोदित अनुभव आधारित अधिगम विधि/'करके सीखने'/अन्य छात्र केंद्रित विधियों व उनके लिए किए गए अन्य प्रावधानों जैसे कला एकीकृत, खेल एकीकृत, कहानी आधारित शिक्षाशास्त्र के प्रशिक्षण पर विशेष रूप से बल देने के लिए अनुभवी व्यक्तियों के साथ मिलकर ज़मीनी स्तर पर योजनाएँ बनाई जानी चाहिए आदि।
4. शिक्षण अधिगम सामग्री के माध्यम से विद्यार्थियों को न केवल प्रत्यक्ष व वास्तविक अनुभव प्रदान कर सकते हैं बल्कि उनकी भ्रांतियों को दूर कर उनके विचारों में अधिक स्पष्टता ला सकते हैं इसलिए शिक्षक शिक्षा प्रक्रिया के दौरान शिक्षण अधिगम सामग्री के निर्माण, उसके प्रयोग एवं उसकी उपयोगिता पर विशेष बल देना चाहिए।

संदर्भ

कोल्ब, डी. और अन्य. 1999. प्रायोगिक अधिगम सिद्धांत : पिछला शोध और नई दिशाएँ, संज्ञानात्मक, सीखने और सोच शैलियों पर दृष्टिकोण. एनजे : लॉरेंस एर्लबाम.

बटलर, एम.जी., के.एस. चर्च और ए.डब्ल्यू. स्पेंसर. 2019. करो, प्रतिबिंबित करो, सोचो, लागू करो : लेखांकन में अनुभवात्मक शिक्षा. जे.ए.सी. शिक्षा. 48. पृ. सं. 12–21. doi: 10.1016/j.jaccedu.2019.05.001

मानव संसाधन विकास मंत्रालय. 1986. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986*. मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार.

रा.शै.अ.प्र.प. 2005. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.

रेड्डीपल्ली, रोजशबाबू. 2018. उच्च प्राथमिक स्तर पर विज्ञान में विज्ञान और विज्ञान प्रक्रिया कौशल के प्रति सीखने की प्राप्ति दृष्टिकोण की प्रभावशीलता. http://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/341574

रैपापोर्ट, डेविड. 2013. प्रायोगिक शिक्षा : एक केस स्टडी दृष्टिकोण. https://www.researchgate.net/publication/277306335_Experiential_Learning_A_Case_Study_Approach

वर्डिंग, एस. और जे. कार्लसन. 2010. अनुभवात्मक अधिगम के लिए शिक्षण : पाँच दृष्टिकोण जो काम करते हैं. प्लायमाउथ, यूके : रोमैन और लिटिलफ़ील्ड. किंडल संस्करण.

शिवानी. 2018. माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि विज्ञान आत्म-प्रभावकारिता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर अनुभवात्मक अधिगम का कार्यक्रम का प्रभाव. http://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/326696

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार.

www.education.gov.in

© NCERT not to be republished